Ancient Indian History
Group — B
Paper — IInd
M.A

(3) Q. → Give an account of the saptang theory of state as describe by ancient political thinker. Q

राज्य का सप्तांग सिद्धान्त

Ans. → प्राचीन भारत में राज्य को एक सजीव संस्था माना जाता था। राज्य एक सजीव एकात्मक संस्था के रूप में स्वीकृत था और सप्त प्रकृतियों से युक्त था।

हिन्दू राज्य शास्त्र में राज्य के सात निर्धारक तत्वों - स्वामी, अमात्य, जनपद, दुर्ग, कोष, दंड और मित्र का उल्लेख किया गया है। राज्य के उपरोक्त अंगों को राज्य की प्रकृति भी कहा गया है। प्रकृति का अभिप्राय स्वभाव अर्थात संयोग से है और राज्य का अभिप्राय आधुनिक विचारकों के अनुसार - "राज्य के उस संगठन से है जो कि प्रभु सत्ता का उपयोग करता है। इस प्रकार के संगठन में व्यक्ति भी हो सकता है और व्यक्ति का समूह भी। इसी प्रकार हिंदू राज्यशास्त्र में स्वामी का अभिप्राय राजा से, अमात्य का राज्य के उच्चाधिकारी से, जनपद का क्षेत्र से, दुर्ग का किला से, कोष का खजाना से, दंड का सेना से और मित्र का सम्पत्ति से अर्थात जीवन के रक्षक से अभिप्राय है।

शुक्राचार्य ने अपनी दंडनीति में राज्य को एक वृक्ष का स्वरूप प्रदान किया है और राजा को वृक्ष का मूल (जड़) माना है। इस संदर्भ में श्लोक इस प्रकार है कि - "

" राज्य वृक्षस्य नृपतिः मूलं स्कंधाश्च मंत्रिणः।
शाखा सेनाधिपा सेना पल्लवाः कुसुमानि च।
प्रजा फलानि भूभागाः बीजं भूमि प्रकल्पिता ॥

अर्थात राजा मूल, अमात्य धड़ (मंत्रीधड़), जनपद शाखाएँ, सैनिक पत्र एवं पुष्प, प्रजा फल तथा बीज भूमि है।

शुक्रनीति सार में राज्य के उपरोक्त अंगों का उल्लेख करते हुए कहा गया है कि राज्य एक जीवित शरीर है जिसके अन्तर्गत राजा सिर के समान, अमात्य नेत्र, मित्र कान, कोष मुख, बल मन, दुर्ग कर है तथा क्षेत्र पग है। इसमें क्षेत्र को राज्य का मूल आधार माना है। राजा अथवा स्वामी के अभाव में न तो राज्य की कल्पना की जा सकती है और न ही क्षेत्र के अभाव में राज्य की।

स्वामी अथवा राजा :- सप्तांग सिद्धान्त में सबसे प्रमुख स्थान स्वामी का था। कौटिल्य के अनुसार राजा उच्चकुल का हो, वृद्ध जनों की बात सुनने वाला हो, विचार शील हो, शौर्य, अजय निर्णय एवं कार्य में शीघ्रता एवं दक्षता दिखाने वाला हो, उत्थानशील होकर राज्य कार्य करने वाला हो। उसे नियंत्रण में रहना चाहिए नहीं तो अन्य ~~प्रकृतियाँ~~ प्रकृतियाँ कुपित होकर उसकी विरुद्ध खड़ी होंगी और उसका विनाश हो जाएगा।

Scanned with CamScanner

अमात्य (High officer) :→ अमात्यों के संबन्ध में कौटिल्य कहते हैं कि - उनमें उत्कृष्ट प्रतिभा होनी चाहिए, उनकी स्मृति बुद्धि और बल उत्कृष्ट होना चाहिए। उन्हें आत्म संयमी होना चाहिए। विपत्तियों के निवारण में समर्थ और दूरदर्शी होना चाहिए। इस प्रकार राज्य संस्था के ये महत्वपूर्ण अंग थे।

जनपद (Territory) :→ जनपद के संबन्ध में कौटिल्य ने बतलाया है कि जनपद की स्थापना ऐसी जगह होनी चाहिए की जिसके मध्य और सीमांतों में किले बने हों। पर्याप्त क्षेत्रफल वाला हो, जिसमें यथेष्ट अन्न पैदा होता हो, जिसमें वन, पर्वतों द्वारा विपत्ति के समय आत्म रक्षा की जा सके। जिसमें शत्रु राजा के शत्रुओं की संख्या अधिक हो। जिसके पास-पड़ोस के राजा दुर्बल हों, जहाँ के किसान मेहनती हों, जहाँ विभिन्न प्रकार के विक्रय पदार्थ उपलब्ध हों। कौटिल्य के अनुसार "सेना, कोष, कृषि और वाणिज्य जनपद पर निर्भर है"।

दुर्ग (Fort) :→ कौटिल्य ने दुर्ग के महत्व को स्वीकार करते हुए बतलाया है कि यदि दुर्ग नहीं रहे तो कोष पर शत्रु सुगमता से अपना अधिकार कर लेगा। सैन्य शक्ति का प्रयोग भलीभाँति वहीं से हो सकता है। मरुदुर्ग, गिरी दुर्ग, जल दुर्ग, वनदुर्ग आदि अनेक प्रकार के दुर्गों का विधान महाभारत और कौटिल्य के अर्थशास्त्र में है। टापू के समान चारों ओर गहरे नालों से आवृत्त स्थल में दुर्ग, ऊँचे टीले पर, रेगिस्तान या ऊसर भूमि और दल-दल से घिरा, सघन झाड़ियों के मध्य दुर्ग का निर्माण किया जाय। अतः दुर्ग ऐसा हो जो युद्ध और देश की रक्षा के लिये उपयोगी हो।

कोष (Treasury) :→ कौटिल्य के अनुसार कोष ऐसा होना चाहिए जिसमें पूर्वजों तथा धर्म की कमाई का संचय हो। इसमें धन धान्य सुवर्ण आदि बहुमूल्य रत्नों से भरापुरा हो और जो दुर्भिक्ष एवं आपत्ति के समय सारी प्रजा की रक्षा कर सकें।

दंड (Army) :→ कौटिल्य के अनुसार दंड का अभिप्राय राज्य की रक्षा के लिये संगठित सेना से है। इस सेना में पिता-पितामह के परंपरा से चले आते हुए अनुशासन में सुशिक्षित वीर सैनिक हों। इन सैनिकों के पुत्र तथा स्त्रियों के निर्वाह का उचित प्रबंध होना चाहिए। ये सैनिक दुःख सहन करने में समर्थ, युद्ध विद्या में विशारद, राजा के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर करने वाला हो। जिसमें क्षत्रियों की बहुलता। इन गुणों से युक्त सेना दण्ड सम्पन्न कहा गया है।

Nirmala

Scanned with CamScanner

मित्र :→ कौटिल्य के अनुसार राज्य की प्रकृति का अंतिम/आखिरी तत्व है। कौटिल्य के अनुसार मित्र वंश परंपरागत हो जो अपने वश में रह सकें, जिनसे विरोध की संभावना न हो और जो समय आने पर सहायता कर सकें। चूँकि प्राचीन काल में राज्य छोटे-छोटे होते थे। अतः राज्य की स्थिरता के लिए मित्र राज्यों का होना आवश्यक समझा जाता था।

Relationship :→ इस प्रकार हम देखते हैं कि हिंदु समाज शास्त्रों में राज्य के विभिन्न प्रकृतियों (अंगों) को एक जीवित शरीर का अंग माना है। ये सातों अंग एक दूसरे से घनिष्ठ रूप से संबंधित हैं। नये पुराने आचार्यों ने भिन्न-भिन्न अंगों की महत्ता प्रदान की है और महत्ता की दृष्टि से भेद किया गया है। जैसे भारद्वाज ने स्वामी के तुलना में अमात्य को अधिक महत्व दिया है। शुक्रनीति सार में जनपद की तुलना पैर से की है जिस प्रकार पैरों पर शरीर स्थित रहता है उसी प्रकार जनपद पर राज्य। कौटिल्य ने बतलाया है कि - "कोष दंड बलं, प्रभु शक्ति॥" अर्थात कोष तथा दण्ड ही राजा का बल है। अन्य प्राचीनकालीन आचार्यों ने राज्य के सातों अंगों में से हर पहलू को अधिक महत्ता प्रदान की है। उपरोक्त सातों अंग (राज्य के) महत्व की दृष्टि से एक दूसरे से कम और अधिक हैं किन्तु कार्य की दृष्टि से सभी अनिवार्य हैं। प्रत्येक अंग का विघटन राज्य के दूसरे अंग को प्रभावित करता है। इस संदर्भ में हम मनु के विचार से पूर्ण सहमत हैं। मनु के अनुसार -

सप्तांगस्येह राज्यस्य विष्टब्धस्य त्रिदण्डवत्।
अन्योन्यगुण वैशेष्यान्न ~~किञ्चि~~ किञ्चिदति रिच्यते॥

Western Concept of State :→ राज्य की पाश्चात्य अवधारणा के अनुसार राज्य के चार अनिवार्य तत्वों का वर्णन किया गया है - (i) क्षेत्र (ii) जनसंख्या (iii) एकता (iv) संगठन (Organization)। प्लेटो से लेकर वर्तमान समय तक राजनीतिक विज्ञान के सभी विचारकों ने क्षेत्र (Territory) और जनसंख्या के अभाव में किसी प्रकार के राज्य की कल्पना नहीं की जा सकती है माना है। हम देखते हैं कि हिंदु राज्य शास्त्र में बहुत पहले ही जनपद के रूप में इसकी कल्पना हो चुकी थी और पुराने आचार्यों ने भी जनपद को ही राज्य का मौलिक माना है। उसी प्रकार पाश्चात्य विद्वानों के अनुसार एकता का अर्थ राजनीतिक इकाई से है। और संगठन का अभिप्राय सरकार से है। ठीक इसी प्रकार हिंदु राज्य शास्त्र में एकता के लिए स्वामी को दर्शाया है। स्वामी का अभिप्राय ~~सम्प्र~~ सम्प्रभु से है। और राजा जिस क्षेत्र का

स्वामी [illegible] वह एक स्वतंत्र राजनीतिक इकाई को दर्शाता है (जबकि: अमात्य का अभिप्राय संगठन यानि सरकार से ही था। इस प्रकार हम पाते हैं कि राज्य के आवश्यक तत्वों की पाश्चात्य अवधारणाओं का भारतीय हिन्दू राज्य शास्त्र में भी हुआ है।

Criticism → हिन्दू राज्य शास्त्र में राज्य के सात अंगों की अवधारणा शोषण के आधार पर बनी हुई थी, साधारण जनता को निशस्त्र रखा और दंड धारण करने का अधिकार क्षत्रियों तक सीमित था। कौटिल्य ने राज्य के विभिन्न तत्वों में पुरोहित को कोई स्थान नहीं दिया है। जबकि वैदिक युग में पुरोहितों की प्रधानता थी। इस तरह कौटिल्य ने अपने उदारवादी दृष्टिकोण का परिचय दिया है। अंत में हम कह सकते हैं कि राज्य के सप्तांग सिद्धान्त भारतीय राज्य शास्त्र प्रणेताओं की एक महत्वपूर्ण देन है।

The Ended
7/1/93